फिलिप्पियों

1 यीशु मसीह के सेवक पौलुस और तिमुथियुस की
ओर से मसीह यीशु में स्थित फिलिप्पी के रहने वाले
सभी संत जनों के नाम जो वहाँ निरीक्षकों और कलीसिया
के सेवकों के साथ निवास करते हैं:
2हमारे परम पिता परमेश्वर और हमारे प्रभु यीशु मसीह
की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति प्राप्त हो।

पौलुस की प्रार्थना

3मैं जब जब तुम्हें याद करता हूँ, तब तब परमेश्वर को
धन्यवाद देता हूँ। 4अपनी हर प्रार्थना में मैं सदा प्रसन्नता के
साथ तुम्हारे लिये प्रार्थना करता हूँ। 5क्योंकि पहले ही दिन
से आज तक तुम सुसमाचार के प्रचार में मेरे सहयोगी रहे
हो। 6मुझे इस बात का पूरा भरोसा है कि वह परमेश्वर
जिसने तुम्हारे बीच ऐसा उत्तम कार्य प्रारम्भ किया है, वही
उसे उसी दिन तक बनाए रखेगा, जब मसीह यीशु फिर
आकर उसे पूरा करेगा।
7तुम सब के विषय में मेरे लिये ऐसा सोचना ठीक ही है।
क्योंकि तुम सब मेरे मन में बसे हुए हो। और न केवल तब
जब मैं जेल में हूँ, बल्कि तब भी जब मैं सुसमाचार के सत्य
की रक्षा करते हुए, उसकी प्रतिष्ठा में लगा था, तुम सब
इस विशेषाधिकार में मेरे साथ अनुग्रह में सहभागी रहे हो।
8परमेश्वर मेरा साक्षी है कि मसीह यीशु द्वारा प्रकट प्रेम से
मैं तुम सब के लिये व्याकुल रहता हूँ।
9मैं यही प्रार्थना करता रहता हूँ:

तुम्हारा प्रेम गहन दृष्टि और
ज्ञान के साथ निरन्तर बढ़े।
10 ये गुण पाकर भले बुरे में अन्तर करके,
सदा भले को अपना लोगे।
और इस तरह तुम पवित्र अकलुष
बन जाओगे उस दिन को
जब मसीह आयेगा।
11 यीशु मसीह की करुणा को पा कर
तुम अति उत्तम काम करोगे
जो प्रभु को महिमा देते हैं,
और उसकी स्तुति बनते।

पौलुस की विपत्तियाँ प्रभु के कार्य में सहायक

12हे भाइयों, मैं तुम्हें जना देना चाहता हूँ कि मेरे
साथ जो कुछ हुआ है, उससे सुसमाचार को बढ़ावा ही
मिला है। 13परिणामस्वरूप संसार के समूचे सुरक्षा
दल तथा अन्य सभी लोगों को यह पता चल गया है कि
मुझे मसीह का अनुयायी होने के कारण ही बंदी
बनाया गया है। 14इसके अतिरिक्त प्रभु में स्थित अधिकतर
भाई मेरे बंदी होने के कारण उत्साहित हुए हैं और
अधिकाधिक साहस के साथ सुसमाचार को निर्भयतापूर्वक
सुना रहे हैं।
15यह सत्य है कि उनमें से कुछ ईर्ष्या और वैर के
कारण मसीह का उपदेश देते हैं किन्तु दूसरे लोग सद्भावना
से प्रेरित होकर मसीह का उपदेश देते हैं। 16ये लोग प्रेम के
कारण ऐसा करते हैं क्योंकि ये जानते हैं कि परमेश्वर ने
सुसमाचार का बचाव करने के लिए ही मुझे यहाँ रखा है।
17किन्तु कुछ और लोग तो सचाई के साथ नहीं, बल्कि
स्वार्थ पूर्ण इच्छा से मसीह का प्रचार करते हैं क्योंकि वे
सोचते हैं कि इससे वे बंदी–गृह में मेरे लिये कष्ट पैदा कर
सकेंगे।
18किन्तु इससे कोई अंतर नहीं पड़ता। महत्वपूर्ण तो
यह है कि एक ढंग से या दूसरे ढंग से, चाहे बुरा उद्देश्य हो,
चाहे भला प्रचार तो मसीह का ही होता है और इससे मुझे
आनन्द मिलता है और आनन्द मिलता ही रहेगा। 19क्योंकि
मैं जानता हूँ कि तुम्हारी प्रार्थनाओं के द्वारा और उस
सहायता से जो यीशु मसीह की आत्मा से प्राप्त होती है,
परिणाम में मेरी रिहाई ही होगी। 20मेरी तीव्र

इच्छा और आशा यही है और मुझे इसका विश्वास है कि
मैं किसी भी बात से निराश नहीं होऊँगा बल्कि पूर्ण
निर्भयता के साथ जैसे मेरे देह से मसीह की महिमा सदा
होती रही है, वैसे ही आगे भी होती रहेगी; चाहे मैं जीऊँ
और चाहे मर जाऊँ। 21क्योंकि मेरे जीवन का अर्थ है
मसीह और मृत्यु का अर्थ है एक उपलब्धि। 22किन्तु यदि
मैं अपने इस शरीर से जीवित ही रहूँ तो इसका अर्थ यह
होगा कि मैं अपने कर्म के परिणाम का आनन्द लूँ। सो मैं
नहीं जानता कि मैं क्या चुनूँ। 23दोनों विकल्पों के बीच
चुनाव में मुझे कठिनाई हो रही है। मैं अपने जीवन से
विदा होकर मसीह के पास जाना चाहता हूँ क्योंकि वह
अति उत्तम होगा। 24किन्तु इस शरीर के साथ ही मेरा यहाँ
रहना तुम्हारे लिये अधिक आवश्यक है। 25और क्योंकि
यह मैं निश्चय के साथ जानता हूँ कि मैं यहीं रहूँगा और
तुम सब की आध्यात्मिक उन्नति और विश्वास से उत्पन्न
आनन्द के लिये तुम्हारे साथ रहता ही रहूँगा। 26ताकि
तुम्हारे पास मेरे लौट आने के परिणामस्वरूप तुम्हें मसीह
यीशु में स्थित मुझ पर गर्व करने का और अधिक आधार
मिल जाये।

27किन्तु हर प्रकार से ऐसा करो कि तुम्हारा आचरण
मसीह के सुसमाचार के अनुकूल रहे। जिससे चाहे मैं तुम्हारे
पास आकर तुम्हें देखूँ और चाहे तुमसे दूर रहूँ, तुम्हारे बारे
में यही सुनूँ कि तुम एक ही आत्मा में दृढ़ता के साथ स्थिर
हो और सुसमाचार से उत्पन्न विश्वास के लिए एक जुट
होकर संघर्ष कर रहे हो। 28तथा मैं यह भी सुनना चाहता
हूँ कि तुम अपने विरोधियों से किसी प्रकार भी नहीं डर
रहे हो। तुम्हारा यह साहस उनके विनाश का प्रमाण है
और यही प्रमाण है तुम्हारी मुक्ति का और परमेश्वर की
ओर से ऐसा ही किया जायेगा। 29क्योंकि मसीह की ओर
से तुम्हें न केवल उसमें विश्वास करने का बल्कि उसके
लिये यातनाएँ झेलने का भी विशेषाधिकार दिया गया है।
30तुम जानते हो कि तुम उसी संघर्ष में जुटे हो, जिसमें मैं
जुटा था और जैसा कि तुम सुनते हो आज तक मैं उसी में
लगा हूँ।

एकतापूर्वक एक दूसरे का ध्यान रखो

2 फिर तुम लोगों में यदि मसीह में कोई उत्साह है,
प्रेम से पैदा हुई कोई सांत्वना है, यदि आत्मा में कोई
भागेदारी है, स्नेह की कोई भावना और सहानुभूति है 2तो
मुझे पूरी तरह प्रसन्न करो। मैं चाहता हूँ, तुम एक तरह से
सोचो, परस्पर एक जैसा प्रेम करो, आत्मा में एका रखो
और एक जैसा ही लक्ष्य रखो। 3ईर्ष्या और बेकार के
अहंकार से कुछ मत करो। बल्कि नम्र बनो तथा दूसरों
को अपने से उत्तम समझो। 4तुममें से हर एक को चाहिये
कि केवल अपना ही नहीं, बल्कि दूसरों के हित का भी
ध्यान रखे।

यीशु से निःस्वार्थ होना सीखो

5अपना चिंतन ठीक वैसा ही रखो जैसा मसीह यीशु का
था।

6जो अपने स्वरूप में यद्यपि साक्षात् परमेश्वर था, किन्तु
उसने परमेश्वर के साथ अपनी इस समानता को कभी
ऐसे महाकोष के समान नहीं समझा जिससे वह चिपका ही
रहे।

7बल्कि उसने तो अपना सब कुछ त्याग कर एक सेवक
का रूप ग्रहण कर लिया और मनुष्य के समान बन गया।
और जब वह अपने बाहरी रूप में मनुष्य जैसा बन गया
8तो उसने अपने आप को नवा लिया। और इतना
आज्ञाकारी बन गया कि अपने प्राण तक न्योछावर कर
दिये और वह भी क्रूस पर।

9इसीलिये परमेश्वर ने भी उसे ऊँचे से ऊँचे स्थान पर
उठाया और उसे वह नाम दिया जो सब नामों के ऊपर है
10ताकि सब कोई जब यीशु के नाम का उच्चारण होते हुए
सुनें, तो नीचे झुक जायें। चाहे वे स्वर्ग के हों, धरती पर के
हों और चाहे धरती के नीचे के हों। 11और हर जीभ परम
पिता परमेश्वर की महिमा के लिए स्वीकार करे, "यीशु
मसीह ही प्रभु है।"

परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप बनो

12इसलिये मेरे प्रियों, तुम मेरे निर्देशों का जैसा उस
समय पालन किया करते थे जब मैं तुम्हारे साथ था,
अब जबकि मैं तुम्हारे साथ नहीं हूँ तब तुम और अधिक
लगन से उनका पालन करो। परमेश्वर के प्रति
सम्पूर्ण आदर भाव के साथ अपने उद्धार को पूरा करने
के लिये तुम लोग काम करते जाओ। 13क्योंकि वह
परमेश्वर ही है जो उन कामों की इच्छा और उन्हें पूरा
करने का कर्म, जो परमेश्वर को भाते हैं, तुममें पैदा
करता है।

14बिना कोई शिकायत या लड़ाई–झगड़ा किये सब काम
करते रहो 15ताकि तुम भोले भाले और पवित्र बन जाओ।
तथा इस कुटिल और पथभ्रष्ट पीढ़ी के लोगों के बीच
परमेश्वर के निष्कलंक बालक बन जाओ। उन के बीच
अन्धेरी दुनिया में तुम उस समय तारे बन कर चमको
16जब तुम उन्हें जीवनदायी सुसंदेश सुनाते होवो। तुम ऐसा
ही करते रहो ताकि मसीह के फिर से लौटने के दिन मैं
यह देख कर कि मेरे जीवन की भाग दौड़ बेकार नहीं
गयी, तुम पर गर्व कर सकूँ।

17तुम्हारा विश्वास एक बलि के रूप में है और यदि
मेरा लहू तुम्हारी बलि पर दाख मधु के समान उँडेल दिया
भी जाये तो मुझे प्रसन्नता है। तुम्हारी प्रसन्नता में मेरा भी
सहभाग है। 18उसी प्रकार तुम भी प्रसन्न रहो और मेरे साथ
आनन्द मनाओ।

तीमुथियुस और इपफ्रुदीतुस

19प्रभु यीशु की सहायता से मुझे तीमुथियुस को तुम्हारे
पास शीघ्र ही भेज देने की आशा है ताकि तुम्हारे समाचारों
से मेरा भी उत्साह बढ़ सके। 20क्योंकि दूसरा कोई ऐसा
व्यक्ति नहीं है जिसकी भावनाएँ मेरे जैसी हों और जो तुम्हारे
कल्याण के लिये सच्चे मन से चिंतित हो। 21क्योंकि और
सभी अपने–अपने कामों में लगे हैं। यीशु मसीह के कामों
में कोई नहीं लगा है। 22तुम उसके चरित्र को जानते हो
कि सुसमाचार के प्रचार में मेरे साथ उसने वैसे ही सेवा
की है, जैसे एक पुत्र अपने पिता के साथ करता है। 23सो
मुझे जैसे ही यह पता चलेगा कि मेरे साथ क्या कुछ होने
जा रहा है मैं उसे तुम्हारे पास भेज देने की आशा रखता हूँ।
24और मेरा विश्वास है कि प्रभु की सहायता से मैं भी
जल्दी ही आऊँगा।

25मैं यह आवश्यक समझता हूँ कि इपफ्रुदीतुस को
तुम्हारे पास भेजूँ जो मेरा भाई है, साथी कार्यकर्ता है और
सहयोगी कर्म–वीर है तथा मुझे आवश्यकता पड़ने पर
मेरी सहायता के लिये तुम्हारा प्रतिनिधि रहा है, 26क्योंकि
वह तुम सब के लिये व्याकुल रहा करता था और इससे
बहुत खिन्न था कि तुमने यह सुना था कि वह बीमार पड़
गया था। 27हाँ, वह बीमार तो था, और वह भी इतना कि
जैसे मर ही जायेगा। किन्तु परमेश्वर ने उस पर अनुग्रह
किया (न केवल उस पर बल्कि मुझ पर भी) ताकि मुझे
दुख पर दुख न मिलें। 28इसीलिये मैं उसे और भी तत्परता
से भेज रहा हूँ ताकि जब तुम उसे देखो तो एक बार फिर
प्रसन्न हो जाओ और मेरा दुःख भी जाता रहे। 29इसलिये
प्रभु में बड़ी प्रसन्नता के साथ उसका स्वागत करो और ऐसे
लोगों का अधिकाधिक आदर करते रहो। 30क्योंकि मसीह
के काम के लिये वह लगभग मर गया था ताकि तुम्हारे
द्वारा की गयी मेरी सेवा में जो कमी रह गई थी, उसे वह
पूरा कर दे, इसके लिये उसने अपने प्राणों की बाजी लगा
दी।

मसीह सबके ऊपर है

3 अतः मेरे भाइयो, प्रभु में आनन्द मनाते रहो। तुम्हें
फिर–फिर उन्हीं बातों को लिखते रहने से मुझे
कोई कष्ट नहीं होता है और तुम्हारे लिये तो यह सुरक्षित
है ही। 2इन कुत्तों से सावधान रहो जो कुकर्मों में लगे हैं।
उन बुरे काम करने वालों से सावधान रहो। 3क्योंकि
सच्चे ख़तना युक्त व्यक्ति तो हम हैं जो अपनी उपासना
को परमेश्वर की आत्मा द्वारा अर्पित करते हैं। और
मसीह यीशु पर गर्व रखते हैं तथा जो कुछ शारीरिक है,
उस पर भरोसा नहीं करते हैं। 4यद्यपि मैं स्वयं जो कुछ
शारीरिक है, उस पर भरोसा कर सकता था। पर यदि
कोई और ऐसे सोचे कि उसके पास शारीरिकता पर
विश्वास करने का हेतु है तो मेरे पास तो वह और भी
अधिक है। 5जब मैं आठ दिन का था, मेरा ख़तना कर
दिया गया था। मैं इस्राएली हूँ। मैं बेंजमीन के वंश का हूँ।
मैं इब्रानी माता–पिता से पैदा हुआ एक इब्रानी हूँ। जहाँ
तक व्यवस्था के विधान तक मेरी पहुँच का प्रश्न है, मैं
एक फरीसी हूँ। 6जहाँ तक मेरी निष्ठा का प्रश्न है, मैंने
कलीसिया को बहुत सताया था। जहाँ तक उस धार्मिकता
का सवाल है जिसे व्यवस्था का विधान सिखाता है, मैं
निर्दोष था। 7किन्तु तब जो मेरा लाभ था, आज उसी को
मसीह के लिये मैं अपनी हानि समझता हूँ। 8इससे भी
बड़ी बात यह है कि मैं अपने प्रभु मसीह यीशु के ज्ञान
की श्रेष्ठता के कारण आज तक सब कुछ को हीन
समझता हूँ। उसी के लिए मैंने सब कुछ का त्याग कर
दिया है और मैं सब कुछ को घृणा की वस्तु समझने लगा
हूँ ताकि मसीह को पा सकूँ 9और उसी में पाया जा सकूँ–
मेरी उस धार्मिकता के कारण नहीं जो व्यवस्था के
विधान पर टिकी थी, बल्कि उस धार्मिकता के कारण
जो मसीह में विश्वास के कारण मिलती है, जो परमेश्वर

से मिलती है और जिसका आधार विश्वास है। 10मैं मसीह
को जानना चाहता हूँ और उस शक्ति का अनुभव करना
चाहता हूँ जिससे उसका पुनरुत्थान हुआ था। मैं उसकी
यातनाओं का भी सहभोगी होना चाहता हूँ। और उसी रूप
को पा लेना चाहता हूँ जिसे उसने अपनी मृत्यु के द्वारा
पाया था। 11इस आशा के साथ कि मैं भी इस प्रकार मरे
हुओं में से उठ कर पुनरुत्थान को प्राप्त करूँ।

लक्ष्य पर पहुँचने को यत्न करते रहो

12ऐसा नहीं है कि मुझे अपनी उपलब्धि हो चुकी है
अथवा मैं पूरा सिद्ध ही बन चुका हूँ। किन्तु मैं उस
उपलब्धि को पा लेने के लिये निरन्तर यत्न कर रहा हूँ
जिसके लिये मसीह यीशु ने मुझे अपना बँधुआ बनाया
था। 13हे भाइयों! मैं यह नहीं सोचता कि मैं उसे प्राप्त कर
चुका हूँ। पर बात यह है कि बीती को बिसार कर, जो
मेरे सामने है, उस लक्ष्य तक पहुँचने के लिये मैं संघर्ष
करता रहता हूँ। 14मैं उस लक्ष्य के लिये निरन्तर यत्न
करता रहता हूँ कि मैं अपने उस पारितोषिक को जीत
लूँ, जिसे मसीह यीशु में पाने के लिये परमेश्वर ने हमें
ऊपर बुलाया है।

15ताकि उन लोगों का, जो हममें से सिद्ध पुरुष बन
चुके हैं, भाव भी ऐसा ही रहे। किन्तु यदि तुम किसी बात
को किसी और ही ढँग से सोचते हो तो तुम्हारे लिये उसका
स्पष्टीकरण परमेश्वर कर देगा। 16जिस सत्य तक हम
पहुँच चुके हैं, हमें उसी पर चलते रहना चाहिये।

17हे भाइयों, औरों के साथ मिलकर मेरा अनुकरण
करो। जो उदाहरण हमने तुम्हारे सामने रखा है, उसके
अनुसार जो जीते हैं, उन पर ध्यान दो। 18क्योंकि ऐसे भी
बहुत से लोग हैं जो मसीह के क्रूस से शत्रुता रखते हुए जीते
हैं। (मैंने तुम्हें बहुत बार बताया है और अब भी मैं यह
बिलख बिलख कर कह रहा हूँ।) 19उनका नाश उनकी
नियति है। उनका पेट ही उनका ईश्वर है। और जिस पर
उन्हें लजाना चाहिये, उस पर वे गर्व करते हैं। उन्हें बस
भौतिक वस्तुओं की चिंता है। 20किन्तु हमारी जन्मभूमि
तो स्वर्ग में है। वहीं से हम अपने उद्धारकर्ता प्रभु यीशु
मसीह के आने की बाट जोह रहे हैं। 21अपनी उस शक्ति
के द्वारा जिससे सब वस्तुओं को वह अपने अधीन कर
लेता है, हमारी दुर्बल देह को बदल कर अपनी दिव्य देह
जैसा बना देगा।

फिलिप्पियों को पौलुस का निर्देश

4 हे मेरे प्रिय भाइयो, तुम मेरी प्रसन्नता हो, मेरे गौरव
हो। तुम्हें जैसे मैंने बताया है, प्रभु में तुम वैसे ही दृढ़
बने रहो।

2मैं यूहोदिया और संतुखे दोनों को प्रोत्साहित करता हूँ
कि तुम प्रभु में एक जैसे विचार बनाये रखो। 3मेरे सच्चे
साथी तुझसे भी मेरा आग्रह है कि इन महिलाओं की सहायता
करना। ये क्लेमेन्स तथा मेरे दूसरे सहकर्मियों सहित
सुसमाचार के प्रचार में मेरे साथ जुटी रही हैं। इनके नाम
जीवनकी पुस्तक में लिखे गये हैं।

4प्रभु में सदा आनन्द मनाते रहो।

5इसे मैं फिर दोहराता हूँ, आनन्द मनाते रहो। तुम्हारी
सहनशील आत्मा का ज्ञान सब लोगों को हो। प्रभु पास ही
है। 6किसी बात की चिंता मत करो, बल्कि हर परिस्थिति
में धन्यवाद सहित प्रार्थना और विनय के साथ अपनी
याचना परमेश्वर के सामने रखते जाओ। 7इसी से परमेश्वर
की ओर से मिलने वाली शांति, जो समझ से परे है तुम्हारे
हृदय और तुम्हारी बुद्धि को मसीह यीशु में सुरक्षित बनाये
रखेगी।

8हे भाइयों, उन बातों का ध्यान करो जो सत्य हैं,
जो भव्य हैं, जो उचित हैं, जो पवित्र हैं, जो आनन्द-दायी
हैं, जो सराहने योग्य हैं या कोई भी अन्य गुण या
कोई प्रशंसा 9जिसे तुमने मुझसे सीखा है, पाया है या
सुना है या जिसे करते मुझे देखा है। उन बातों का
अभ्यास करते रहो। शांति का स्रोत परमेश्वर तुम्हारे साथ
रहेगा।

फिलिप्पी मसीहियों के उपहार के लिये पौलुस का धन्यवाद

10तुम निश्चय ही मेरी भलाई के लिये सोचा करते थे
किन्तु तुम्हें उसे दिखाने का अवसर नहीं मिला था, किन्तु
अब आखिरकार तुममें मेरे प्रति फिर से चिंता जागी है।
इससे मैं प्रभु में बहुत आनन्दित हुआ हूँ। 11किसी
आवश्यकता के कारण मैं यह नहीं कह रहा हूँ। क्योंकि
जैसी भी परिस्थिति में मैं रहूँ, मैंने उसी में संतोष करना
सीख लिया है। 12मैं अभावों के बीच रहने का रहस्य भी
जानता हूँ और यह भी जानता हूँ कि सम्पन्नता में कैसे
रहा जाता है। कैसा भी समय हो और कैसी भी परिस्थिति,
चाहे पेट भरा हो और चाहे भूखा, चाहे पास में बहुत

कुछ हो और चाहे कुछ भी नहीं, मैंने उन सब में सुखी रहे
का भेद सीख लिया है। 13जो मुझे शक्ति देता है, उसके द्वारा
मैं सभी परिस्थितियों का सामना कर सकता हूँ।

14कुछ भी हो तुमने मेरे कष्टों में हाथ बटा कर अच्छा
ही किया है। 15हे फिलिप्पियो, तुम तो जानते ही हो,
सुसमाचार के प्रचार के उन आरम्भिक दिनों में जब मैंने
मैसिडोनिया छोड़ा था, तो लेने-देने के विषय में केवल
मात्र तुम्हारी कलीसिया को छोड़ कर किसी और कलीसिया
ने मेरा हाथ नहीं बटाया था। 16मैं जब थिस्सिलुनीके में
था, मेरी आवश्यकताएँ पूरी करने के लिये तुमने बार बार
मुझे सहायता भेजी थी। 17ऐसा नहीं है कि मैं उपहारों
का इच्छुक हूँ, बल्कि मैं तो यह चाहता हूँ कि तुम्हारे
खाते में लाभ जुड़ता ही चला जाये। 18तुमने इपफ्रुदीतुस
के हाथों जो उपहार मधुर गंध भेंट के रूप में मेरे पास
भेजे हैं वे एक ऐसा स्वीकार करने योग्य बलिदान हैं
जिससे परमेश्वर प्रसन्न होता है। उन उपहारों के कारण
मेरे पास मेरी आवश्यकता से कहीं अधिक हो गया है,
मुझे पूरी तरह दिया गया है, बल्कि उससे भी अधिक
भरपूर दिया गया है। वे वस्तुएँ मधुर गंध भेंट के रूप में हैं,
एक ऐसा स्वीकार करने योग्य बलिदान जिससे परमेश्वर
प्रसन्न होता है। 19मेरा परमेश्वर तुम्हारी सभी
आवश्यकताओं को मसीह यीशु में प्राप्त अपने भव्य धन
से पूरा करेगा। 20हमारे परम पिता परमेश्वर की सदा सदा
महिमा होती रहे। आमीन!

पत्र का समापन

21मसीह यीशु के हर एक संत को नमस्कार। मेरे
साथ जो भाई हैं, तुम्हें नमस्कार करते हैं। 22तुम्हें सभी संत
और विशेष कर कैसर परिवार के लोग नमस्कार करते
हैं।

23तुम में से हर एक पर हमारे प्रभु यीशु मसीह का
अनुग्रह तुम्हारी आत्मा के साथ रहे।

License Agreement for Bible Texts

World Bible Translation Center
Last Updated: September 21, 2006

Copyright © 2006 by World Bible Translation Center
All rights reserved.

These Scriptures:

- Are copyrighted by World Bible Translation Center.
- Are not public domain.
- May not be altered or modified in any form.
- May not be sold or offered for sale in any form.
- May not be used for commercial purposes (including, but not limited to, use in advertising or Web banners used for the purpose of selling online add space).
- May be distributed without modification in electronic form for non-commercial use. However, they may not be hosted on any kind of server (including a Web or ftp server) without written permission. A copy of this license (without modification) must also be included.
- May be quoted for any purpose, up to 1,000 verses, without written permission. However, the extent of quotation must not comprise a complete book nor should it amount to more than 50% of the work in which it is quoted. A copyright notice must appear on the title or copyright page using this pattern: "Taken from the HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™ © 2006 by World Bible Translation Center, Inc. and used by permission." If the text quoted is from one of WBTC's non-English versions, the printed title of the actual text quoted will be substituted for "HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™." The copyright notice must appear in English or be translated into another language. When quotations from WBTC's text are used in non-saleable media, such as church bulletins, orders of service, posters, transparencies or similar media, a complete copyright notice is not required, but the initials of the version (such as "ERV" for the Easy-to-Read Version™ in English) must appear at the end of each quotation.

Any use of these Scriptures other than those listed above is prohibited. For additional rights and permission for usage, such as the use of WBTC's text on a Web site, or for clarification of any of the above, please contact World Bible Translation Center in writing or by email at distribution@wbtc.com.

World Bible Translation Center
P.O. Box 820648
Fort Worth, Texas 76182, USA
Telephone: 1-817-595-1664
Toll-Free in US: 1-888-54-BIBLE
E-mail: info@wbtc.com

WBTC's web site – World Bible Translation Center's web site: http://www.wbtc.org

Order online – To order a copy of our texts online, go to: http://www.wbtc.org

Current license agreement – *This license is subject to change without notice. The current license can be found at:* http://www.wbtc.org/downloads/biblelicense.htm

Trouble viewing this file – If the text in this document does not display correctly, use Adobe Acrobat Reader 5.0 or higher. Download Adobe Acrobat Reader from:
http://www.adobe.com/products/acrobat/readstep2.html

Viewing Chinese or Korean PDFs – To view the Chinese or Korean PDFs, it may be necessary to download the Chinese Simplified or Korean font pack from Adobe. Download the font packs from:
http://www.adobe.com/products/acrobat/acrrasianfontpack.html